सादर प्रकाशनार्थ

राजयोगी ओमप्रकाश भाई जी को श्रद्धासुमन अर्पित

कोरबा–26.12.2016–प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के मीडिया विंग के राष्ट्रीय अध्यक्ष आदरणीय राजयोगी ब्रह्माकुमार ओमप्रकाश भाई जी ने 25 दिसम्बर 2015 को इस पार्थिव शरीर को त्याग कर सूक्ष्म वतन की राह ली थी। आप इंदौर जोन के क्षेत्रीय निर्देशक के साथ अंतर्राष्ट्रोय मुख्यालय माउन्ट आबू में दो प्रमुख प्रशासनिक संगठनों ब्रह्माकुमारी एजुकेशनल सोसायटी तथा राजयोग एजुकेशन एण्ड रिसर्च फाउण्डेशन के बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स भी थे। आपने रायपुर छत्तीसगढ़ में विशाल शांति सरोवर आध्यात्मिक अध्ययन एवं अनुभूति केन्द्र की स्थापना की। आपने आदिवासी बाहुल्य बस्तर में आदिवासी परियोजना द्वारा हजारों आदिवासियों के जीवन में परिवर्तन के लिये 75 राजयोग उत्थान केन्द्रों की स्थापना की। विश्व सद्भावना भवन कोरबा में प्रथम पुण्य तिथि पर श्रद्धाजंली कार्यकम में श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए भ्राता ननकीराम कंवर पूर्व गृह मंत्री छ.ग. शासन ने कहा कि भाई जी का सानिध्य मुझे बहुत पहले से मिला हुआ था। ऐसे विचार और व्यक्तित्व बहुत कम मिलते हैं। इस संस्था में आने से मुझे लगता है कि सभी भाई बहनें एक ही सांचे में ढ़ले हुए हैं। सभी के व्यवहार में, प्रेम में, सद्भावना में व जिसको हम बोल सकते हैं, इंसानियत में, सद्गुण नजर आते हैं। इसी कारण मैं इस संस्था में खिचा हुआ आ जाता हूॅ। भ्राता देवेन्द्र पाण्डेय वरि.भा.ज.पा. ने कहा कि भाई जी के द्वारा निर्मित रायपुर में शांति सरोवर, जो कि विधान सभा मार्ग पर स्थित है, वहॉ जाने से ही एक अलग अनुभूति होती है। वैसे देखा जाये तो कुछ व्यक्ति अपने कार्य से पहचान बनाते हैं और कार्य से अलग हो जाते हैं। भाई जी की इच्छा शक्ति प्रबल थी, जो उन्होंने दूसरों के लिये कार्य किये वे अविस्मरणीय हैं। भ्राता रामकुमार साहू अति. महाप्रबंधक एन.टी.पी.सी. कोरबा ने कहा कि मैं हमेशा ही भाई जी का मार्गदर्शन लेता रहता था और कार्य में सफलता का अनुभव करता था। भ्राता विजय खेत्रपाल सम्पादक विजय मेल ने कहा कोरबा का सेवाकेन्द्र जब बना था तबसे मैं इस संस्था से जुड़ा हुआ हूॅ और रायपुर एक कार्यकम में मैं ओमप्रकाश भाई जी से मिला था। मैं इस बात को कहते हुए कभी नहीं चूकूंगा कि वे एक प्रभावशाली आध्यत्मिक व्यक्तित्व थे। उनसे मिलने पर मुझे ऐसा लगा कि मैं किसी व्यक्तित्व को देख रहा हूॅ और उन्हें समझ रहा हूॅ। उनकी वाणी में ओजस्व था। आज हम के अनुभवों को याद कर रहें हैं। भ्राता अमर अग्रवाल, अमर संवाद ने कहा कि भाईजी का नाम ही है ओमप्रकाश जी, जिस नाम से हम ओमशोति

शब्द की शुरूआत करते हैं। उन्होंने अपने जीवन का इतना प्रकाशवान बनाया जो अनेकों को आज भी मार्गदर्शन दे रहा है। भ्राता एल.एन. कड़वे वरिष्ठ समाज सेवी ने कहा कि यह शरीर तो नश्वर है लेकिन आत्मा अविनाशी है। हम पद, धन, कुल के आधार पर महान नहीं बन सकते किन्तु अपने सतकर्मों से महान बनते हैं। मूर्ति बनने के लिये पत्थर को कई चोटे सहन करनी पड़ती हैं। इसी तरह भाई जी ने जीवन के अनेक विपरीत परिस्थतियों के बावजूद भी अपने सत्कर्मों को कभी आझल नहीं होने दिया। उस महान विभूति को मेरा श्रद्धा सुमन अर्पित है। बहन डॉ.मनीषा सिंह पंचकर्म आयुर्वेद चिकित्सालय ने कहा कि भाई जी शरीर से नहीं अपितु चेतना के रूप हमारे बीच में विद्यमान हैं। भाई जी के कई कार्यकमों में सम्मिलित भी हुई हूँ, वे दिव्य चेतना से ओतप्रोत कुशल व्यक्तित्व के धनी थे। मैं अपनी श्रद्धान्जली भाई जी को अंर्तमन से अंर्तहृदय से अर्पित करती हूँ। बहन लवलीन गांधी ने कविता, बहन कंचन मोर्ये ने गीत की प्रस्तुति की तथा भ्राता शेखरराम सिंह ने मंच संचालन किया।

मानवीय सेवा में, ब्रह्माकुमारी रूकमणी।